श्रीश्री बलराम विलास



रचयिता

श्रीयुक्त दयाकृष्ण जी (ब्रजवासी)

* श्रीश्रीगौरहरिर्जयति *

प्रकाशितग्रन्थसंख्या—१३८

* बलदेव-विलास *

रचयिता—

जरैध स्वर्गीय पं० दयाकृष्णशर्मा बलदेव (मथुरा)

सम्पादक—

बिहारीलाल सक्सेना "राकेश" बी० ए० एल० टी० प्रभाकर
साहित्यरत्न हिन्दी विशेषज्ञ, शोधकार्यकर्ता राष्ट्रीय-
महाविद्यालय हा० सै० स्कूल गोवर्धन
मथुरा उ० प्र०

सहायक सम्पादक—

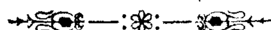
भुवनेन्द्र दत्त शास्त्री भिषभाचार्य बलदेव मथुरा उ० प्र०

प्रकाशकः— व मुद्रक
बाबाकृष्णदास
गौरहरिप्रेस,
कुसुमसरोवर ग्वालियर मन्दिर
राधाकुण्ड (मथुरा)
उ० प्र०

...र
...तया
...१०२३

मूल्य ।)

समर्पणम्



जब दयाकृष्ण के उपवन में श्रद्धा के सुमन सुहाये थे ।
थे पुष्प उसी दिन के ये संचित जब तेरे गुन में गाये थे ।।
तभी समर्पित हो न सके जो वस्तु सदा ही तुम्हारी थी ।
है आज समर्पण उसी वस्तु का दयाकृष्ण ने गाई थी ।।१।।
बलदेवविलास को लेकर के पुष्पांजली सम्हारी है ।
हे शेषावतार ! क्षमा करना लीनी शरण तुम्हारी है ।।
हे अनन्त ! दिवंगत आत्मा को यह सामीप्य तुम्हें ही देना है ।
गुण अवगुण का ध्यान न धर बस यही निवेदन करना है ।।२।।



भावत्क
भुवनेन्द्र भिषगाचार्य श्रीधन्वतरि
चिकित्सालय बलदेव
(मथुरा) उ० प्र०

❀ भूमिका ❀

ब्रजभाषा साहित्य के प्राचीन साहित्यकारों के ग्रंथों पर शोध कार्य करते समय मुझे ज्ञात हुआ कि ब्रजभाषा के प्रसिद्ध जनकवि स्वर्गीय पं० दयाकृष्ण शर्मा राजवैद्य बलदेवनगर (जनपद मथुरा उ० प्र०) अभीतक उपेक्षा के विषय बने हुए हैं। उनके प्रपौत्र पं० होतीलाल शर्मा वैद्यराज ने मुझे उनके हस्तलिखित ग्रंथों की पाँडुलिपियों का अवलोकन कराया जिससे कवि के जीवन परिचय व काव्यसाधना के विषय में यथेष्ट विवरण प्राप्त हुआ।

जीवन परिचय

स्वर्गीय पं० दयाकृष्णजी का जन्मसंवत् १८५२ विक्रमी में पूज्य (स्वर्गीय) गोस्वामी श्री कल्याणदेवजी के आदि गौड़ अहिवासी ब्राह्मण प्रतिष्ठित कुल में ब्रजमंडल के प्रमुख तीर्थस्थान बलदेवनगर जिला मथुरा में हुआ था। पंडितजी के पूर्वज सदैव से ही श्रीबलदेवजी के उपासक रहे हैं। श्रीदयाकृष्णजी की शिक्षा दीक्षा घर पर ही हुई। शिक्षा के प्रति इनकी रुचि बाल्यकाल से ही रही। श्रीदयाकृष्णजी अपने समय के प्रतिष्ठित ज्योतिषी और वैद्यों में से थे। कोटा, बूँदी, गुजरात, काठियावाड़ आदि के रजवाड़ों में यह चिकित्सक का कार्य कर चुके थे। उन्हीं लोगों ने इनकी सेवाओं से प्रसन्न होकर इन्हें "राजवैद्य" की पदवी से विभूषित कर सम्मानित किया था। इनके सुपुत्र स्वर्गीय आयुर्वेद मार्तण्ड श्रीयुत श्रीधरजी भी अपने समय के प्रख्यातजनसेवी चिकित्सक व साहित्यसेवी रहे हैं। इनकी मृत्यु भडौचगुजरात प्रान्त में संवत् १९०२ में हुई थी इस प्रकार इनका रचनाकाल संवत १८६९ से लेकर सम्बत् १९०२ के अन्तर्गत माना जा सकता है। ३३ वर्ष के साहित्यिक जीवन में उक्त कवि द्वारा १३ ग्रंथों का निर्माण कवि की काव्यसाधना का द्योतक है।

साहित्यसाधना व विद्या प्रेम

इनकी ज्योतिषविद्या, आयुर्वेद और हिन्दी साहित्य में गहन आस्था थी। ज्योतिष और आयुर्वेद आदिविषयों के अनेक ग्रथ अन्य राज्यों से मँगवाकर सुयोग्यलेखकों व विद्वानों द्वारा उन्हें हस्त लिखित पाँडुलिपियों में लिपिबद्धकराकरअपने पुस्तकालय में स्थान दिया है जो आज भी उनके वंशजों के पास सुरक्षित है उस समयमुद्रणालयों का सर्वथा अभाव ही था। इनके वंशज आयुर्वेद रत्न श्रीभुवनेन्द्रदत्त भिषगाचार्य बलदेवनगर (मथुरा उ० प्र०) में इनकी स्मृति में श्रीधन्वतंरि चिकित्सालय व पुस्तकालय चला रहे है। उन्होंने हमें कई सहस्त्र पुस्तकों का वृहद पुस्तकालय व उनके हस्तलिखित ग्रंथों का अतिस्नेह से निरीक्षण कराया।

"बलदेवविलास में ग्रथकार ने निम्नपंक्तियों में रचनाकाल दिया है इति श्रीबलदेवनिवासी आदि गौड़ अहिवासी विप्रकल्याण वंशजसुकवि पंडा दयाकृष्णविरचित श्रीबलदेवविलास ग्रथसम्पूर्ण संवत १८६६ मितिमाघकृष्णपक्ष २ सोमवारेलिखितम।"

यह ५४ पृष्ठ की हस्तलिखित अप्रकाशित पुस्तक है जिसमें श्री-बलदेवजी के स्वरूप, महिमा, शृंगार, नखशिखवर्णन, झूला, रास-विहार, होली व बलभद्रलीलाओं का वर्णन किया गया है। इतना विशदसाङ्गोपांग लीलाओं का वर्णन एक ही स्थलपरअन्यत्र नहीं मिलता है और न इन जैसा वर्णन कोई कवि कर ही पाया है। श्रीबलभद्र उत्सव और नियमों का प्रचार बलदेव में सर्वप्रथम इन्हीं के द्वारा सम्पन्न हुआ जो कि आज तक प्रचलित है। हलधर सम्बन्धी काव्यों में इसका प्रमुखस्थान रहेगा और यह ग्रंथ हिन्दी साहित्य के अभाव की पूर्ति करेगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। पुस्तक पृष्ठ अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में मंगलाचरण, नखशिख वर्णन, व बलभद्रशृंगारवर्णन है। द्वितीय अध्याय में श्री-

बलभद्रमहिमा, तृतीय अध्याय में श्रीबलराम के ऋतु विहार, हिंडोला, बसन्त ऋतु, व होली का मनोहारी वर्णन है । चतुर्थ अध्याय में महारास, गोपिका बिहार, पंचम अध्याय में श्रीबलरामविनयमाला व पृष्ठ अध्याय में दयाकृष्णजी की वाणी सवैया, कवित्त, दोहा, व राग इत्यादि के द्वारा मुखरित हो उठी है । इनके मौलिक ग्रंथों में अलंकार प्रकाश, शेषनागपिंगल, इश्क दरियाऊ, इश्क चमन, रेखता-भूलना प्रमुख है। लगन, साँगीत, नामस्तोत्र, सप्तश्लोकी, बलदेवाष्टक इत्यादि इनकी फुटकर रचनाएं है इन्होंने हिन्दी साहित्य के १२, आयुर्वेदिक ७, ज्योतिष के १२ और धर्मशास्त्र के ४ प्राचीन हस्त-लिखितग्रंथों को संग्रहित किया है जिससे इनकी संग्रह प्रवृतिका यथेष्ट ज्ञान होता है। आयुर्वेद, ज्योतिषविद्या, धर्म शास्त्रपर इनके अनेक सग्रहीत ग्रंथ आज भी, अप्रकाशित ही पड़े हुए है । इनकी उपदेशात्मक कविताएँ जनसमाज में, आज भी प्रचलित है । इनके कवित्त हलधर अशीतिका, व हलधर वंदना ग्रंथों में (सम्पादक श्रीकन्हैयालाल पांडे एम० ए० प्रकाशक कल्याण सेवा समिति बल-देव मथुरा) प्रकाशित हुए है।

मेरे व बाबा कृष्णदासजी के प्रूफ को भली भाँति देखे जाने पर भी यदि प्रेस की कोई भूल रह गई हो तो विद्वतजन इसके लिये मुझे क्षमा करने की कृपा करेंगे । मैं डा० माधवाचार्यजी अध्यक्ष हिन्दी विभाग सिद्धार्थ कालेज बम्बई का अत्यधिक आभारी हूँ जिनकी सत्प्रेरणा व अदम्य उत्साह ने मेरी साहित्यिक प्रवृति को शोध कार्य की ओर अग्रसर किया। पं० होतीलालशर्मा वैद्यराज ने मेरे बलदेव प्रवासकाल में इस ग्रंथ से सम्वन्धितलीलाओं व कार्य कलापों के विषय में विस्तृत परिचय देकर मेरे शोधकार्य के उत्साह को द्विगुणित किया अतएव वे सर्वथा धन्यवाद के पात्र है। आयुर्वेद रत्न श्रीभुवनेन्द्रदत्त भिषभाचार्य वलदेव नगर ने अत्याधिक परिश्रम

कर पुस्तक की शुद्ध स्वच्छ प्रमाणिक प्रतिलिपि तैयार कर मेरे सम्पादन कार्य को सुलभ किया । अतः मैं उनका अत्यधिक अनुग्रहीत हूँ ।

मैं कुसुम सरोवर वासी बाबा कृष्णदासजी का अत्यधिक आभारी हूँ जिन्होंने मेरी प्रार्थना पर इस पुस्तक के प्रकाशन का भार वहन कर इसे हिन्दी संसार के समक्ष प्रस्तुत किया बिना उनके सहयोग के यह ग्रंथ प्रकाश में न आपाता । बाबाजी ने हिन्दी ब्रजभाषा व संस्कृतसाहित्य के १३० दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों का प्रकाशन कर हिन्दी साहित्य में एक युगान्तर उपस्थित किया है जो हिन्दी विद्वानों के लिये अनुकरणीय हैं ।

राष्ट्रीयविद्यालय हा० सै०
स्कूल,गोवर्धन (मथुरा)
उ० प्र०

राधेबिहारीलाल राकेश हिन्दी
विशेषज्ञ, शोधकार्यकर्त्ता
ब्रजसाहित्य

❀ दो शब्द ❀

प्रिय पाठक गण !

आज प्रस्तुत पुस्तक बलदेवविलास को प्रथम बार प्रकाशित देखकर आपको अति हर्ष होगा । इस पुस्तक में श्री-कृष्णाग्रज भगवान् हलधर के चरित्र एवं लीलाओं का सुमधुर ब्रज-भाषा में इतना विशदविवरण उपलब्ध है जितना कि संभवत अन्यत्र नही मिल सकेगा । यह सर्वविदित है कि कलियुग में बल-देवजी का विशेष महत्व है और सेवासद्य फलदायी है ।

ग्रंथ के रचियता राजवैद्य स्वर्गीय पं० दयाकृष्णजी का जन्म-सौभाग्य से इनके प्रियनगर बलदेव (मथुराजनपद) में आदि गौड़ अधिकारी ब्राह्मण पूज्यपाद १००८ गो० श्रीकल्याणदेवजी के वंश में हुआ था । शेषावतार में आपकी विशेष श्रद्धा व भक्ति थी । इसी भक्तिभावना से प्रेरित होकर अपने इष्टदेव के प्रति अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया । इसके अतिरिक्त ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्मशास्त्र इत्यादि विषयों पर भी अच्छा अधिकार था और इन शास्त्रों से सम्बंधित कई मौलिक पुस्तकों की रचना की । आपके द्वारा सस्थापित . चिकित्सालय व पुस्तकालय अभीतक सुचारुरूप से चल रहा है जिसमें स्वर्गीय कविराज की तीन सहस्त्र हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। इनमें अनेक मौलिक एवं संग्रहीत ग्रंथ अभीतक अप्रकाशित ही है और मेरे व अन्य वंशजों के पास सुरक्षित है । चिरकाल से मेरे पिता वैद्यराज प० हीरालाल शर्मा का इस पुस्तक को प्रकाशित कराने की महती आकांक्षा थी । आज स्वर्गीय पूर्वज की आत्मा व डा० माधवाचार्य अध्यक्ष हिन्दी विभाग सिद्धार्थ-कालेज बम्बई की सत्प्रेरणा से यह कार्य पूर्ण हो रहा है । इनकी शेष रचनाएँ भी शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है ।

मैं श्रीयुत राधेबिहारीलाल "राकेश" हिन्दी विशेषज्ञ, मथुरा

नगर के प्रख्यात साहित्यकार व शोधकार्यकर्ता का अत्यधिक अनुग्रहीत हूँ जिनके सद्प्रयास द्वारा उक्त ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। पुस्तक के सम्पादन में उनका अपार योगदान रहा है । आप श्री-दयाकृष्णजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोधकार्य कर रहे हैं । और उन्हें प्रकाश में लाने की दिशा में सतत प्रयत्नशील है।

मैं कुसुमसरोवरवासी (राधाकुन्ड जि० मथुरा) पूज्यपाद १००८ बाबा श्रीकृष्णदासजी को नहीं भूल सकता जिन्होंने अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी इस पुस्तक का प्रकाशन भार वहन करना स्वीकार किया। अतः वे सर्वथा धन्यवाद के पात्र हैं । बाबाजी ने ब्रजभाषा हिन्दी साहित्य व संस्कृत के १३० दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाशित किया है ।

विश्वास है बलभद्र भक्तों की साधना में यह पुस्तक उपादेयता पूर्ण सिद्ध होगी और मेरे पूर्वज स्वर्गीय कविराज की आत्मा को शान्ति प्रदान करेगी ।

॥ शुभमस्तु ॥

भवदीय
वैद्यराजभुवनेन्द्रदत्तशास्त्री भिषभाचार्य
श्रीधन्वतरि चिकित्सालय बलदेव
(मथुरा) उ० प्र०



मथुरा के साहित्यकार

ब्रज मथुरा जनपद के गौरवपूर्ण इतिहास व साहित्यकारों की काव्य प्रतिभा का रसास्वादन कराने के उद्देश्य से उक्त ग्रंथ का निर्माण हो रहा है। मथुरा के प्रख्यात साहित्यकार श्रीराधेबिहारीलाल सक्सेना राकेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा उक्त विषय पर साहित्य महोपाध्याय की उपाधि के लिये अन्वेषण कार्य-कर रहे हैं इस जनपद के उत्तम, मध्य, प्रगतिशील नवोदित सभी प्रकार के साहित्यकारों को निसंकोच इस ग्रन्थ में स्थान प्रदान किया जायेगा जिससे यह एक प्रमाणिक ग्रन्थ बन सके।

मथुरा ब्रज प्रदेश में भूतकाल ऐसी अनेक साहित्यिक विभूतियाँ उत्पन्न हुई है जिनके उत्कृष्ट ग्रंथो ने विश्व में इस जनपद का नाम ऊँचाकर इसे यश व गौरव प्रदान किया है। समय के फेर में वे प्रतिभाएँ हमारे मध्य से विलीन हो गई, उनके ग्रन्थ प्राय लुप्त होते जा रहे हैं। व हम उन्हें भूलते जा रहे हैं।

यह एक व्यक्ति का नहीं अनेक सुज्ञ व्यक्तियों व साहित्यिक संस्थाओं का कार्य है और उन्हीं के सहयोग से सर्वांग पूर्ण हो सकता है।

यह कार्य उसी समय हो सकता है जव कि शोधकार्यकर्ता के समक्ष सम्बन्धित साहित्यकारों के जीवन परिचय व उनकी कृतियाँ उपस्थित हो

अतः साहित्यकारों से प्रार्थना है कि अपना सांक्षिप्त परिचय, दो प्रतिनिधि रचनाओं व प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति शोध-कार्यकर्ता के पास मौ० दसविसा गोवर्धन मथुरा भेजने का कष्ट करे। आशा हैं इस कार्य में साहित्य प्रेमियों व साहित्यकारों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

॥ श्रीरेवती रमणो जयति ॥

बलदेव-विलास



रचियता राजवैद्य स्व० दयाकृष्ण जी

[प्रथम अध्याय]

मंगलाचरण—

दोहा— दोउ कर जोरि निहोरि कै पद पंकज सिरनाय।
वार वार विनती करौं दीजै ग्रन्थ बनाय ॥१॥
शुभ अच्छिर मोहि दीजियै गोस्वामी गुणरासि।
जथाबुद्धि वरनन करौं श्रीबलदेवविलास ॥२॥
दयाकृष्ण बलदेव की दयाकृष्ण चित चाहि।
कृपादृष्टि अवलोकियै अपनी दिस अतगाहि ॥३॥
अरिखंडन मंडन मही लसत शेष अवतार।
दयाकृष्ण वरनन करै हलमूसर हथियार ॥४॥
सुख संपति मंगलकरण अशुभ हरन की टेव।
देव भेव पावें नहीं जै जै श्रीबलदेव ॥५॥
जैति सच्चिदानन्दघन पूरनब्रह्मस्वरूप ।
व्यापी मायाते परें अजर अनादि अनूप ॥६॥
देव भेव पावें नहीं ध्यामें आठों जाम ।
ऐसे श्रीबलदेव के वंदौ पद अभिराम ॥७॥
विद्युत छवि श्रीरेवती सजल जलद बलिराम।
जुगल रूप नयनन वसौ नहीं औरसों काम ॥८॥

श्रीबलभद्र नखशिख वर्णन—

दोहा— परम नरम नवनीततें चरन कमल हृदपोहि।
भवसागर के पोत द्वै विद्यमान जग जोहि ॥१॥

पद नख दुति छवि को कहै उपमा कहिय न जाय ।
मनौं चंद दश टूक ह्वै तिनपर बैठ्यौ आय ॥२॥
गुलफ सुलभ सोभित अमल बनी ओप अभिराम ।
मनौं प्रभा प्रकासकर बैठे सालिगराम ॥३॥
रतनखचितदुति देखियै जुग नूपुर झनकार ।
पढ़त कोक की कारिका मनौं हंस हितधार ॥४॥
पग पिंडुरी जुग जंघ की उपमा कहिय न जाय ।
हाटक ओप न पावहीं कदली देखि लज्याय ॥५॥
गति गयन्द नहि छ्वै सकै कटि केहरि सकुचाय ।
उनडारो सिर धूरि लै वे वनदव के जाय ॥६॥
कटि लिपटी कलकिंकिनी चलति करति झनकार ।
मनहु धर्म के खम्भसौं बांधी वंदनवार ॥७॥
आभ नाभि की कहै सोभित अमित गंभीर ।
जनु अनूप वर कूपए राजत सरितातीर ॥८॥
उरवर पर त्रवली मनौं अलीपूर जिमि जोइ ।
भूरिभाग अस्नान करि डारत सब अघ धोइ ॥९॥
हृदय सरोवर पर मनौं रोमावलि छवि पाइ ।
किधों रुकम की सिलापर अलिछौंना दरसाय ॥१०॥
वृषभ कंधसम कंधवर राजत दीह सुदेस ।
नाक लोक के थंभ द्वै भूपर मनौं विशेस ॥११॥
भुज अजानु विव राजहीं मनौं नेह की फाँस ।
कोमल बनी मृनालसी पुजवै जनमन आस ॥१२॥
कनक करन कंकन लसै रतन जटित दरसाय ।
जनु चम्पा के सेहरा रहे कंज लपटाय ॥१३॥
अति कोमल कर कमल से अरुण कमल के भाय ।
मंहदी कर रंजित मनौं सोभा अधिक सुहाय ॥१४।

रतन जटित कर मुद्रिका अंगुरिन में दरसाय ।
नख दरपन प्रतिबिंब मिलि सौगुनि ओप लखाय ॥१५॥
भाई सी ग्रीवा बनी किधों कम्बु की जोइ ।
रेखा तीनि प्रवीन लखि सब दुख डारति धोइ ॥१६॥
मुक्तमाल जैमालवर रतन कनक की माल ।
दुलरी तिलरी चौलरी कंठ कंठला लाल ॥१७॥
लखि ठोड़ी छोड़ी सकुचि तोरो कुल की कानि ।
चिबुक चमक चितमें बसी संकरषन की आनि॥१८॥
अरुन ओठ छवि को कहैं पल्लव ललित लजात ।
देत ओप कवि बिंबफल सोऊ मन सकुचात ॥१९॥
मोतिन की अवली त्रहु राजति परम विसेखि ।
दसन दमकि दमकनि मनौं बिज्जु छटासी देखि ॥२०॥
रसना सबरस की भरी रस परखन में लीन ।
पोट पावरी सी कही कविकुल परम प्रवीन ॥२१॥
लखि मुरझत मन मैनकौ निरखत होत अडोल ।
दर्पन से विवि झलमलें मंजुल गोल कपोल ॥२२॥
नासा पुट सुठ सोभही मुक्ता लेत हिलोर ।
खेंचि लेत निज ओर कों वेसरि मोर मरोर ॥२३॥
चंचल मीन कुरंग से खंजन देखि लजात ।
दयाकृष्ण छवि देखकें जलज जात कुम्हलात ॥२४॥
खंजन मद भंजन करन मन रंजन ए नैन ।
अंजनजुत अवलोकियै मन उपजावत मैंन ॥२५॥
ससि समीप बैठे मनौं द्वै खंजन सुखपाय ।
नैंन बने अरविन्द से मुखसौ चंद सहाय ॥२६॥
तीखे पंच सुबानतें सीखे करन सुघात ।
नैंन अहेरी हैं किधौं मारत नाहि लज्यात ॥२७॥

कुटिल असित अति देखियें भृकुटी त्रिकुटी मांहि ।
किधों पंचसर चाप ए उपमा अवर सु नाहि ॥२८॥
उज्जल श्रवण सुसीप सम गिरिवर गुफासुपान ।
जगमगात दुति झलमलै कुंडलै ललित सुकान ॥२९॥
भाल रसाल विसाल अति अर्द्ध चंद्र आकार।
हाटक की पाटी मनौ लिखे अंक करतार ॥३०॥
केसरि आड़ि ललाटिपै गोरे मुख दरसाय।
सुरगुरु ससि की गोद में बैठ्यौ अति हरषाय ॥३१॥
कुंकुमविंदु सुभालपर सोभा ऐसी लेत ।
छिति सुत लै ससि अक में बैठ्यौ यों छवि देत ॥३२॥
वदन चंद लखि लाजहीं कोटिक चंद प्रकास।
खिली ज्योंन्ह जनु शरद की आनन ओप उज्यास ॥३३॥
नाक लोकसों देखियै अरि सुगन्ध को धाम।
कुंतलपिता सुजानियै उग्रसीस अभिराम ॥३४॥
लावे चुपरे चीकने रेसम रसम सुवेस ।
श्याम घटा घुमड़ो मनौं घूंघरवारे केस ॥३५॥
चटकदार चीरा फब्यौ तापर अधिक सुहाय ।
गजमोतिन कौ गुच्छ ढिग कलगी जटित जराय ॥३६॥
लटकी ललित लिलारपर लट छवि यों सरसाय।
भृंगनकी अवली मनौं रही कंज लपटाय ॥३७॥
चकित होत लखि ईठहू डीठि नीठि ठहराय।
कै कदली कौ पत्र यह किधों पीठि दरसाय ॥३८॥
श्याम पाट वैनी गुही मैया हित ललचाय।
मुक्त गुच्छ तिहि मध्य में रह्यौ अधिक छवि छाय ॥३९॥
जै जै श्रीबलदेव जू लसत सेस अवतार ।
दयाकृष्ण नखशिख कह्यौ लीजो सुकवि सुधार ॥४०॥

श्रीबलभद्र श्रंगार वर्णन—

कवित्त— सोहै मंजु सीसपर पगिया सुवेस अति,
टेढ़ी चारु चन्द्रिका विराजत अभेव है।
चन्दन की खौरि चारु सोहति लिलाटपर,
कुंडल झलक कान राजत अछेव है॥
कंठ कंठमालहार भनैं दयाकृष्ण अब,
भक्त प्रतिपालवे की जाकें परो टेव है।
दिन दिन प्रति सदा आनंद कौ सिन्धु बाढें,
राजें ब्रजमण्डल में राजा बलदेव हैं॥१॥
चन्द सौ वदन अरविन्दहू कौ गारचौ गर्व,
मोर वारे कुंडल मरोरवारी अलकें।
कारी सटकारी श्याम चीकनी सुवेस लसें,
गोरे गंडमंडल पै नागिनसी झलकें॥
पल्लव ते अरुनारे अधर दयाकृष्ण कहैं,
दाडिमसे दसन वतीसी छवि छलकें।
सब सुख कन्द बसुदेवजू कौ नन्द,
बिधि ताके रूप देखनमें ओटकरी पलकें॥२॥
सोहै वेस पगिया मुकट शिखि सीस राजै,
कुंडल झलक मानों उडप अभिराम की।
मोतिन की मालवर उर में विसाल फवो,
कहति न बन आवै सोभा सुखधामकी॥
ओढें पटनील भुजदाहिनें विराजै हल,
भनैं दयाकृष्ण जोति लाजैं कोटि काम की।
गोरे तन छवि छाजै पास रेवती विराजैं,
रविशशि देखि लाजैं भांकी बलराम की॥३॥

टेढे टेढे वोलें बेंन नैननि की सैन टेढी ,
टेढी ही चितौनि वाढै आनंद कि शोर कौ ।
टेढी चारु चन्द्रिका सुदेश सीस पाग टेढी,
कुंडल श्रवन टेढे सोभित मरोर कौ ॥
नासिका बुलाक टेढी चिवुक चमक सोहै,
टेढी कंठमाल दयाकृष्ण सिरमोर कौ।
धिग् जाकी जननी कहावै जार जातक सो,
विना बलदाऊ भरोसौ करै और कौ ॥४॥
चंदसौ वदन वनि ललित अनूप वन्यौ,
वेसरि सुवेस नासा मोती फरकन है।
अंजन फव्यौ है नैन बोलत मधुरवैन,
सोभा सुखसिन्धु सदा मन कौ हरन है ॥
विव से अरुण चारु अधर सुढार बने,
भनै दयाकृष्ण वर मंगल के करन हैं ।
भवदुःख दूर करैं प्रेम पुंज हीय भरैं,
आनंद के करन बलदेव के चरन हैं ॥५॥
दोहा— बने नैनविवि कंज से मुखसोभा ससि नाइँ ।
दयाकृष्ण बलदेव की छबि निरखत न अघाइँ ॥६॥
अरुन नैन छवि को कहै अस कवि कौन प्रवीन ।
करि जावक अस्नान वर बैठे सरवर मीन ।७।

जंगला—

ये कजरारे वंकदृग तेरे मारि चले मानहु घाव घनेरे ।
इश्कचिमन के रंग रगे हैं सोभित हैं मनो मतखरेरे ॥
जिहि चितवत तहि पार होत हैं के काहू खरसान धरेरे ।
दयाकृष्ण चित ते नहि विसरत लिख दीये मानों चित्रचितेरे ॥८

श्रीबलभद्र महिमा वर्णन—

कवित्त— शेष अवतार शुक सारदा न पामें पार,
गामें वेदचारि जाके अन्तर अभेव की।
आनंद के सिन्धु दुःख दुंदके हरनहारे,
मंगल बढ़ावें सदा प्रेम के अछेव की॥
पूरन पुरान परें पूरन प्रताप बाढें,
भनें दयाकृष्ण करै संतति सुसेव को।
सोभा के सदन वेद वंदत चरन जाके,
आनद अखण्ड सोहै झांकी बलदेव की॥१॥

तारी लै लगामें मुनि ध्यानमें न आमें,
श्रुति पारहू नपामें जाके अन्तर गमनकी।
कालहू कौ काल सब लोकालोककों कृपाल,
दृष्टि में निहालदेत वसुधा अवनिकी॥
आनद कौ कन्द दुखदुंद कौ हरनहारौ,
भनें दयाकृष्ण छवि चौदह भुवन की।
सोई बलदेवदेव राजैं ब्रजमण्डल में,
कौन करै पटतरि श्रीरेवतीरमन की॥२॥

भैरव भूपाल कोऊ शारदा कपीस जपौ,
कोऊ जपौ देवीदेव दानव सुघोरकों।
कोऊ साधौ मंत्र तंत्र जंत्र सो अनेकविधि,
कोऊ जपौ जाप कोऊ लाखन किरोरको॥
कोऊ साधौ भूतप्रेत कोऊ प्रतिहारिनीकों,
भनै दयाकृष्ण अरे साधौचित चोरकों।
धृग जाकी जननी कहावै जारजातक सौं,
छांडि बलदाऊऐ भरोसौ करे औरकों॥३॥

सेष अवतारहै महेश जाकौ ध्यान धरै,
पावत न पार सब सुख के करन हैं।
मंजुल मुखारविन्द लोचन कमल खिले,
सोभित परम अति उज्ज्वल वरन है ॥
विंवसे अरुण ओठ नासिका बुलाक फवी,
भनैं दयाकृष्ण हलमूसर धरन है।
दुष्ट के छरन दुख दारिद के हरनहारे,
महाघोर के धरन बलदेव के चरन हैं ॥४।
ईशतीनि लोक के अलौकिक अपार जोति,
पावत न पार जाके अन्तर अभेव की।
पूरन सुवेषवर सच्चित आनंदघन,
व्यापक सकल विश्व अजर अछेत्र की ॥
एक करप्याला पान दूजे कर अभै देत,
भनैं दयाकृष्ण ताके पाइ पदसेवकी।
झुठ झक्यौ जगमांहि झांकत वृथाही डोल्यौ,
उझकिन झाक्यौ झाँकी बलदेवकी ॥५॥

सवैया—

अति लाजभरे सुखसिंधपरे रस रूपढरे मदमोचन हैं।
वरमंजुल गोल कपोलन की छवि को वरनै भ्रममोचन हैं ॥
लटकें लट श्याम सुवेष मनों यह जानि दयाहिय रोचन हैं।
मुखचंद निहारि मिटें दुखदुंद लसैं अरविन्द सुलोचन हैं। ६॥
अलि अंग अनूपम राजत हैं दृग सोभित हैं मनु मैन छली।
जग जाहिर जोति जगै जिनकी हथियार दया हल औ मुसली ॥
निहचें करि आवत भोग लगावत जे सुखपावत व्योमथली।
सब पूरन काज करैं जनके ब्रजमण्डल में बलदेव वली ॥७॥
जग ओघन खंडन मंडन हैं सुख दंडन दोष सुजानि परें।
तिनके बड़भागि कहै न परें करसों परसें भवसिन्धु तरें ॥

अमरागन सेव करें तिहिं ठौर दयाचित के तन ताप हरें।
बलदेव सरोवर मांहि सुनेमसो प्रातसमै असनानकरें ।।८।।

अतरनि तरकीनी चंदन के वारिभीनी,
पगिया सुवेषभीनी बांधी सुकरन हैं ।
ललितलिलार सोहै मोहिनी को मन मोहै,
ऐसीछवि दृग जोहै सोई वरजन हैं ।।
अंग न उमंग राजै कोटिकाम रति लाजै,
दयाकृष्ण सुखसाजै कुन्द के वरन हैं।
मंगलकरन हलमूसर धरन अति,
कंज तें नरम बलदेव के चरन हैं ।।९।।

शेषावतारे कोई पावत ना पारे शिवविरंचि,
पचिहारे गुनसागर अपारे हैं ।
रोहिणी के वारे वसुदेव प्राणप्यारे,
रेवतीरमण हारे जगलीला विस्तारे हैं ।।
शंखचूड़ मारे प्रलम्ब गहिडारे,
केसी कंस सेपछारे ऐसेपौरुषा तिहारे हैं ।
भुजबल के भारे मद छकि मतवारे,
हलमूसर धरनवारे सो हमारे रखवारे हैं ।।१०।।

पद—करी सब दाऊजी की होय। (टेक)
जो अपनौ पुरुषारथ राखत अतिभूठौ है सोय ।।
साधन मंत्र जंत्र उद्यम बल यह सब डारौ धोय ।
जो कछु लिखिडारी हलधरनै मेंटि सकइ नहि कोय ।।११।।

सवैया—
विद्रुमकुंज लसै जहाँ सुन्दर मन्दिर में नित दुंदुभी वाजै।
खोवत दुःख सभी जनके प्राण राखत हैं निजभक्तनि लाजै ।।
कृष्ण कहैं तिनसो करजोरिकै नील दुकूल धरें शिरसाजै ।
माखन और चढै मिसरी ब्रजमण्डलमें बलदेव विराजै ।।१२।।

यदुपतिराजरहे जँहसुन्दर देखतदूरि भजें दुख तनके ।
जाकी माधुरीमूरति की छवि निरखत मोद बढै मिटें संसय मनके ।
दरसन कों धावत नरनारि सबै करत मनोरथ पूरन जनके ।
ऐसे देव दयालु श्रीदाऊजी राजत ब्रजमण्डल बनके ॥१३॥

छन्द—गोरेरंगसोहै त्रभुवन मनमोहै,
ता समानरूप रासि वरसैया को ।
सुकवि दयासों कहैं यदुकुल मण्डन हैं,
अखिल खलखंडन के बलनदुरैया को ॥
रेवतीरमन त्रभुवन को हरन दुख,
लाल बलिराम है लढैतो लाल मैया को ।
मोद वरसैया सुखवृन्द सरसैया,
हरमूसर को धरैया भैया कुंवर कन्हैया का ॥

दोहा—ब्रज में बलदर्शन विना जगन्नाथ जो जांय ।
तिनकी यात्रा अर्द्ध फल मुखसों दई बताय ॥१५॥

देसदेस के नारिनर आवत करि ही हेत ।
माखनमिश्री भोग धरि हंडा करि सुखलेत ॥१६॥
करि जोरें विनती करें ठड़े भूप दरवार ।
करत मनोरथ सिद्ध सब राजत ओप अपार ॥१७॥

वरन वरन वागे तहाँ पहरावत करि हेत ।
हंडाभोग सुखीर धरि मनवांछित फल लेत ॥१८॥
गजरथविभो भंडारकर जिनकी सरि कोउ नाहि ।
प्रगट कलानिधि देखियै ब्रजमण्डल के मांहि ॥१९॥

द्वारद्वार पर द्वारिया पौरि पौरिया देखि ।
ठड़े पुरंदर से मनौ लहिमन मो विसेखि ॥२०॥

झरति द्वार पर दुंदभी फहरत व्योम निसान ।
चमर पताका छत्रवर मंजुल तने वितान ॥२१॥
लसत दिवाकर दाहिनै वाम निसा कर जोइ ।
अनिमा महिमा आदि दै भरति भामरें सोइ ॥२२॥
लैकर वीन नवीनपिय बजवत खरों प्रवीन ।
ह्वै अधीन मन दीन करि भए राम में लीन ॥२३॥
दाऊजी बड़े दयाल हैं अरज वेगि सुनि लेत ।
नैंक नजर के फेर में सदन अरवै भरि देत ॥२४॥
अलबेले बलदेवजी सब देवन सरताजि ।
जिन बैकुंठहू छांड़िकै वास कियौ ब्रजमांझि ॥२५॥
अलबेले के दरसकों धावत नर और नारि ।
पूरनमासी बारहनकूं लागै मेलाभारि ॥२६॥
अलबेले की माधुरी मूरति रहत सदा ही सुधासी ।
अलबेले बांके हैं पंडा विप्र सदा अहिवासी ॥२७॥
पूर्णेच्छा कल्याण की कीनो विद्रुम आय ।
अच्छय वट के मूलतें प्रगटि भए यदुराय ॥२८॥

अध्यायतृतीय

श्रीबलराम ऋतुविहार वर्णन–

ग्रीष्म—

कवित्त— खासे खसखास के बंगला सुदेस बने,
ओर पास खासे आवखाने लै निहारे जू ।
मंजुल वितान चारु चमर सुछत्र सोहैं,
केवरा गुलाब कुन्द केतकी निवारीजू ॥

मोगरा सुमोतिया को झारी बनी ठौर ठौर,
भनैं दयाकृष्ण सौहै सोभा सुख कारी जू ।
फूलन चौखंडी लाल फूलन की उरमाल,
फूलै फूल वंगला में राजें श्रीविहारी जू ॥१॥

पावस वर्णन—

सवैया—

सीतलमन्द समीर वहै वगश्वेत धुजा फहरानि लगी
दामिनि दीपदि पै चहुँ ओर हरी द्रुमवेलि सुहानि लगी ।
दयाकृष्ण पिया परदेश वसैं यहाँ पावस की रितु आनि लगी ।
ब्रजमण्डल भुपर ऊपर आजु घटा घन की घहरानि लगी ॥१॥
घनघोर उठे चहूँ औरनते मुरवान के बोल सुहान लगे ।
कल गुंजत भौंरन की अवली छविसों सब्द कहान लगे ॥
वर चातक दादुर दूनल से दयाकृष्ण हियै सियरान लगे ।
ब्रजमण्डल भूपर ऊपर आजु वड़े बदरा घहरान लगे ॥२॥
कवित्त— कारे कारे भारे भारे सुवन कलिंद केसे,
गरजि गरजि सखि देत सुख प्यारे हैं ।
तमके से वाहन हैं ढारन हैं मानगढ,
कज्जल के रंग अंग बारुणी सुधारे हैं ॥
झूमि झूमि झूमत हैं घूमति घुमर मांहि,
भनैं दयाकृष्ण चारु सिन्धु तें उधारे हैं ।
सोहैं श्यामघन घने भूपर घुमड़ि छाए,
मानौं मैन भूप के मतंग मतवारे हैं ॥३॥
छप्पय-श्यामघटा रहि घुमडि मध्य तिहि छटा सुहाई ।
वरषा दुरत मराल कीर केकी धुनि छाई ॥
अमनी परम अनूप हरति मनु सकल मुनिन मन ।
पूरे सलिल तडाग कौन कहि सकै गुनि थजन ॥

दयाकृष्ण सोभित सरस फूले विटप कदम्ब तहँ ।
राजाधिराज महाराज बर लसत रेवतीरमण जहँ ॥४॥

मल्हार—

मोहि नही ऋतुभावै हरिविनु मोहि नहीं ऋतु भावै । (टेक)
उमडि घटाघन ओलरि आई चपला अति डरपावै ॥
दादुर मोर पपैहा बोलें मदन मरोर जनावै ।
दयाकृष्ण पिय वेगि मिलौ अब तुम बिन कछु न सुहावै ॥५॥

झूला (हिंडोरा) वर्णन—

राग— बलदाऊ झूलतरंग हिडोरना ।
रतन जटित दोउ खम्भा सोहैं झालरि लेत हिलोरना ॥
उततें श्यामघटा झुकि आईं इत नीलाम्बर मोरना ।
हरियाली चहुँदिसि में छाई केकी कोयल बोलना ॥
ब्रज जुवती मिलि झोटा देवें सुर मन लेत हिलोरना ।
दयाकृष्ण प्रभु रमकति झूलें चितवन में चित चोरना ॥१

दोहा—बने खम्भ दोउ कनक के डारी रतन जराय ।
झूलत श्रीबलदेव जू अति से हिय हरषाय ॥२॥

इकदिस ठाड़ीं सहचरीं झोरा देत झकोर ।
झूलत जुगल सनेह में मो मन लेत हिलोर ॥३॥

ब्रज जुवतिन के मध्यमिलि झूलत बलि हरषाय ।
हँसि लिपटत उर रेवती रह्यौ रंग सरसाय ॥४॥

गावत गीत सुकोकिला बजवत मेघ मृदंग ।
दामिनि दीपि दिखावहीं झूलत सुवलि उमंग ॥५॥

बने खंभ जुग रुकमके लगे सुहीरा लाल ।
झूलत श्रीबलभद्र जू झुलवत खरे सुग्वाल ॥६॥

वसन्त ऋतु वर्णन—

कवित्त— उड़त गुलाल लाल अंबर अबीर छयौ,
सूजत न गात अंधिआरी अवरेखियै।
बाजत नवीन बीन मुरज मृदंग ताल,
बढ्यौ प्रेम ख्याल सुधि नांहि जिय पेखियै॥
अतर नितर करि केसरि सुमुख मांड्यौ,
भनें दयाकृष्ण कौन उपमा विसेखियै।
संग ग्वालबाल अभिराम कोटिकाम,
खेलत बसंत बलिराम आजु देखियै॥१॥

राग—अब जिनि मोहि भरो नदनंदन जो खेलोंगी तुम संग।
छिरकत चोवा चंदन ऊपर नानाविधि के रंग॥
बाजत ताल मृदंग झांझि डफ महुवर और मोहौचंग।
दयाकृष्ण प्रभु दास तिहारौ राखौ अपने संग॥२॥

होलीवर्णन—

दोहा—ब्रजगोरी दौरी फिरें रोरी लै लै हाथ।
वरजोरी होरी रचें बलदाऊ के साथ॥१॥
चोवा मुखमंडन कियौ सोभा इमि सरसाय।
नील कमल मनु चंद्रमा लील्यौ औसर पाय॥२॥
नैंन आंजि मुख मांडिकै गंडन विन्दु लगाय।
केसर अतर गुलाबजल छिरकत अंग सुधाय॥३॥
कोऊ पकरति धायकै कोऊ अंक लगाय।
कोऊ देति छुड़ायकै कोऊ लखि मुसिकाय॥४॥
लाल गुलाल उड़ायकें अम्बर लियौ दुराय।
अरुण वितान मनोजनें रोपे मनु ललचाय॥५॥

करि कुंकुम कौ लेप मुख वेसरि लई छिनाय।
मनौं लालवर चीर में लीनों अंग दुराय ॥६॥
डफ बजाय सतरायकें नैननि नैन नचाय।
देति गारि डर डारिकें अंगुली गाल गढाय ।७॥
दृग सूँ दृग मटकाव हीं लियें ग्वाल की ओट।
चटदै पटन बचावहीं पिचकारिन की चोट ॥८॥
कनक कमोरी ढोरियाँ रंगवोरियाँ वाल।
भरि भरि डारें झोरियाँ लै लै लाल गुलाल ॥९॥
अपनी अपनी टोलियाँ मिलि सब होंहि खुश्याल।
इस्क भेद दी होलियाँ गावैं दै दै ताल ॥१०॥
रूपमस्त हस्तीचढे लोइन कंज विसाल।
इस्क फैल माते फिरें गावें होरी ख्याल ॥११॥
महुवरि बेनु मृदंग डफ वीना मुरज रसाल।
एकहि जंत्र अनेक सम वाजत गति तिहि काल ॥१२॥
कृष्ण मित्र रवि जीवसम तेजवन्त बलधाम।
ब्रज-जुवतिन के वस परे सुनियत श्रीबलराम ॥१३॥
केसरि मुखमंडन कियौ गंडन विन्दु लगाय।
इह नहि सुत वसुदेवकौ अन्य भूप के भाय ॥१४॥
मन भायौ फगुवा दयौ करगहि नाच नचाय।
ऐसी होरी नदनंदकी कहति दया कविराय ॥१५॥

रागभैरव—

श्रीबलिराम कृष्ण की जोरी मेरे आंगन खेलौ होरी।
चोवा चंदन अवीर अरगजा नानारंगनि भरी हैं कमोरी ॥
बाजत तालमृदंग झांझ डफ महुअर अरु मुरली कलघोरी।
दयाकृष्ण के हृदै विराजौ सदा निरंतर यह जोरी ॥१६॥

रागकाफी—

होरी पिया छैल सों खेलों ।
आँखि आँजि मुखमांडि सखीरी हो हो कहि कहि पेलों ॥
चौवा चंदन अबीर कुमकुमा भरि भरि झोली रेलों ।
लोक लाज कुल कान सखीरी गुरजन संकन ठेलौं ॥
दयाकृष्ण हों या फागुन में सासु ननद रिस झेलों । १७

रागसोरठि—मेरी गली जिन्ह आवै रे कान्हा ।
जब आवै तू मेरे आंगन में पिचकारिन भर लावैरे ॥
चोवा चंदन अवीर अरगजा केसरि रंग भिजावै ।
दयाकृष्ण यह ढीठ लगरवा नाहक नाच नचावै ॥१८।

अध्याय चतुर्थ

श्रीवलभद्र महारास वर्णन—

दोहा—दुःख दहन सब सुख करन जै जै श्रीबलदेव ।
जग कारन तारन तरनि पावत कोउ न भेव ॥१॥
पुरवासिनसों ह्वै विदा मिलि घनश्याम सुसंग ।
तजि सुवर्णमय द्वारिका आये सुबलि उमंग ॥२॥
ब्रजमण्डल पापति भए चढ करि भूमि विमान ।
श्रवण सुनत हिय हर्ष है मिले अगाऊ आनि ॥३॥
नंद मिले जसुदा मिलीं मिले गोप औ ग्वाल ।
अपनी अपनी भेंट लै मिलीं सकल ब्रजवाल ॥४॥
चैत चाँदनी चद की चहुँदिसि भूमि प्रकास ।
लखि हुलास मन में बढचौ कीजै रासविलास ॥५॥
वैन नाद हलधर नै कीन्हौ ऋतुवसंत की रजनी ।
नव सत साजि सिंगार गोपिका आईं गज गतिगमनी ॥६॥
ही जितनी निज गोपिका लईं गोपिका टेरि ।
अंग अंग सब साजिकर आईं सुबल सुहेरि ॥७॥

मधुर मृदंग उपंग बहु वाजत बीन नवीन ।
तीनि ग्राम सुरसप्त मे भए सबै मन लीन ।८॥
अंस अंस भुज मेलिकें गंडनि गंड लगाय ।
करत अधर रसपान विलि अंकनि अंक लगाय ॥९॥
मदन आस पूजत सबै दोऊ हिय हरषात ।
मन वांछित फल पाइकें रहे एक द्वै गात ॥१०॥
उरसों उर भुज मेलिकें रहीं राम उर लाय ।
जनु कंचन के कोट पर रही छटा लपटाय ॥११॥
सुथरे विथरे वारवर रहे सुमुख पर छाय ।
श्यामघटा जनु आयकें लीनों चंद छिपाय ॥१२॥
मुखसों मुखवर जोरिकें करत अधर रसपान ।
मिल्यौ चंद जनु चंदसों तजि कलंक की बान ॥१३॥
देखत देव थकित भये ब्रजनारिन की भीर ।
रास रच्यौं बलवीर नै विद्रुम वन के तीर ॥१४॥
चकित भये सब देखिकें निरखि थके सुर भूप ।
रास विलास कियौ गोपी संग बल धरि श्याम स्वरूप ॥१५
ब्रज मण्डल राजत सोई श्रीबलदेव सुरूप ।
सुख वरषत हरषत हियैं बाढति ओप अनूप ॥१६॥
वरसत फूल अकास ते धन्य धन्य कहि देव ।
ब्रजवासिन सुख देन कों आये ब्रज बलदेव ॥१७॥
ब्रजहिं रहे बलराम ब्रजवासिन के प्रेम वसु ।
किये सकल विधि काज छाय रह्यौ संसार जसु ॥१८॥

कालिन्दीभेदन व जलविहार वर्णन---

विलसि रासरस केलि कौ बाढ्यौ श्रम तन आय ।
जल विहार इच्छा तबै कीनी बलि हरषाय ॥१॥

यमुना कहि टेरत भये नहिं आई तिहि काल ।
तो से वली अनेक मैं देखे बड़े विशाल ॥२॥
लै हल ग्रीव सुगेरिकैं लई खेंचि तत्काल ।
रूप धारि कर जोरि कै अस्तुति करी रसाल ॥३॥
होइ सांति जल केलि पुनि कीनी श्रीबलिराम ।
निज गोपिन इच्छा सुफल कीनी अति अभिराम ॥४॥
जल मीननि को गति चले कबहु कहूँ सुख पाय ।
लै चुभकी वहुरयौ कहूँ उछरत कित हूँ जाय ॥५॥
रंभन रास विलास वहु कीनों मन विहसाय ।
आलिगन चुम्बन सरस कहै कौन प्रगटाय ॥६॥
लक्ष कोटि निज गोपिका तिन सँग कियौ विहार ।
कवि कुल कौन प्रवीन अस जो करि सकै उचार ॥७॥
या विधि रास विलास सुख अरु जल केलि नवीन ।
श्रीबलदेव विलास यह कीनों सुनहु प्रवीन ॥८॥

मद्पान वर्णन—

कुंडलिया—

प्रान प्रिया उर धीरधर करि आऊँ मद पान ।
करि आऊँ मद पान अब निश्चै मानौ ॥१॥
मिलैं सघन बनकुंज हमें जिय अपने जानौ ॥
सकल भांति विश्वास यहै दृढ जियमें धरियै ।
दुःख हरन मन मैं न भामिनी कृपा सु करियै ॥२॥
दयाकृष्ण सब सुख करन हो तुम हमरे प्रान ।
प्रान पिया उर धीर धरि करि आऊँ मद पान ॥३॥

गोपिकाविहार वर्णन—

सब समाज षट रितुन के लै आई ब्रजबाल ।
ना जानू वलि पीयकों को भावै तत काल ॥१॥

कोई पान खवाव ही कोई लेति उगार ।
कोई मुकर दिखावही कोई करति बयार ॥२॥
कोई लखि मुसिकावही कोऊ कहति अनन्त ।
कोऊ सैंन बतावहीं चारि नारि कौ कन्त ॥३॥
कोऊ मुख चुंबन करै कोऊ उर लपटाय ।
कोउ पियामय ह्वै रही छबि निरखत न अघाय ॥४॥
कोउ लजीले नयन सों चितवत पियतन फेरि ।
कोउ हसि मुसिकायकें गही सुवलि मन हेरि ॥५॥
फूले कुसुम सुगन्ध के सीतल वहै समीर ।
सुख विलास विहरत हृदै केलि करत बलवीर ॥६॥
ससि मुख सोभा देत है रक्त नैन सुख दैंन ।
बंक विलोकनि सैंन सों मन्मथ मन हरि लैंन ॥७॥

सवैया— जलजात के पात में गात दुराय,
चली अलबेली नवेलो अली हो ।
सोधो सुगंध लगायकें अंगन,
चाह पगी हित रंगरलो हो ॥
जानीपरी खगी प्रेम के पंथ में,
फूलि रही मनौं कुंदकली हो ।
जोवन जोति जुन्हाइ छई,
दयाकृष्ण के रूप में जाइ मिली हो ॥८॥

राग-खंवायचि—

नंद को गुमानो म्हानें छेड़ै छै ।
हों अपने मग चली जाति ही बरा जोरी घेरै छै ॥
म्हांसुकहै कोठी नै चालौ आंखें भेड़ै छै ।
दयाकृष्ण निज दास तुमारौ चरना भेड़ै छै ॥९॥

अध्याय पंचम

श्रीबलरामविनयमाला—

स०-विनतो जनकी सुनि लेहु प्रभू दुख दूरि सबै हिय के करनें।
तुम हौ गुनसागर बुद्धि उजागर नायक देवन के बरनें ॥
इह है विधि होन अधीन दयाकबि को बरनै तुम्हरे वरनें।
अब देहु अभै करि दास कृपानिधि राखि बली अपने सरनें ॥१

दोहा—श्रीबलदेव कृपा करौ मोहि आपनौ जानि।
भवसागर के पोत जनु तुमही हौ सुख दानि ॥२॥
संकर षन तुम हौ सदा अपने जन की ओर।
देव भेव पावें नहीं जै जै नन्दकिशोर ॥३॥
मारे असुर प्रचण्ड बलि हलमूसल कर धारि।
भक्त जनन के कारणें धरचौ शेष अवतारि ॥४॥
हूँ अधीन सामर्थ तुम श्रीबलदेव कृपालु।
दयाकृष्ण तेरे सरन हूजै वेगि दयालु ॥५॥
सुख संपति आनन्द करन मंगल सिन्धु अपार।
दयाकृष्ण बलभद्र कों प्रणमत बार बार ॥६॥
कृपा कटाच्छ निहारियै जानि आपनौं दास।
अनत न कहूँ डुलाइयै राखौ अपने पास ॥७॥

चौपाई—

श्रीबलदेव बड़े महाराजा। सदा करें भक्तन के काजा ॥१॥
जो कोइ मनकर सेवन करै। तिनके सकल मनोरथ करै ॥२॥
चाणूर और मुषट पछारे। दुविद प्रलम्ब छिनक में मारे ॥३
द्रुपदसुता को चीर बढ़ायौ। भक्तन कौ कीयौ मन भायौ ॥४॥
भक्त हेतु नरहरि वपु धारचौ। बूढ़त ते गजराज उबारचौ ॥५
इन्दर कोप कियौ ब्रज ऊपर। बूंदन एक परी भुअ ऊपर ॥३॥
कृपा करी गोवरधन धारचौ। ब्रज बूढ़त ते तुमने राख्यों ॥७॥

दुर्जोधन की मेवा त्यागी। विदुर दास कीनौं बड़भागी ॥८॥
सब भक्तन पर किरपा कीजै। दुष्टन मार यही प्रन लीजै ॥६
दयाकृष्ण मागै कछु दीजै। अन पायिनी भगति उर कीजै ॥

दोहा—अति उदार भूभार हर वेद न पावैं भेव।
अशुभ हरन सब सुख करन जै जै श्रीबलदेव ॥११॥

छन्द— मोहि जानि किंकर आपनौ निज भक्ति जन को दीजियै।
तुमरौ हो कहाय विहाय हौं दिग सुजस रस नित पीजियै ॥
ब्रजचंद आनंदकंद हलधर दीनवन्धु दयाल हौ।
यहि कहत चारौ वेद हैं तुम प्रणत जन प्रति पाल हौ ॥
दयाकृष्ण तुम्हरौ दास ताकी विनय लीजै मानिकै।
अनपायनी उर भक्ति दीजै आपनौ जन जानिकै ॥१२॥

रागभैरव—

तनक हरि मेरी ओर निहारौ।
भवसागर की त्रास कठिन है तुम ही पार उतारौ ॥
हम है दीन प्रभु दीनानाथ हो इतनी चित्त विचारौ।
दयाकृष्ण बलभद्र तुम्हारौ मोकूँ वेगि उवारौ ॥१३॥
बलराम कृपा करि जनकूँ भव सागर के पार उतारौ।
माया मोह पाश वसु कीनौ सूझत नाहिन दृष्टि किनारौ।
सागर अगम थाह अति गहरी दीन जानि तुम हृदै विचारौ
दयाकृष्ण निजदास तुम्हारौ बांह पकरि प्रभु मोहि उवारौ



म्हाँ नै चाहो छौ तो म्हारी सुधि लीजो जी,
बालमम्हां ने चाहों छौ तौ म्हारी सुधि लीजौ।
कांई चूक पड़ी छैमांसु गुना माफ कर दोजो जी ॥
आठ पहरि मनें कल न परत है दीन जानि चित दीजो जी।
दयाकृष्ण बलवीर विहारी वेगि दरस मोहि दीजो जी ॥

राग पंचम—

भोर भये कुंजन ते निकसे श्रीबलवीर विहारी।
हो बड़भागि मानि जिय अपने तुम ही जीव जिवारी॥
सुन्दर छवि निरखत ही मोही कीयौ पान सुधारी।
तन मन धन न्यौछावरि करिकें दयाकृष्ण बलिहारी॥१६॥
हमारे श्रीबलदेव सहाय।
कर्मजाल में आनि फंस्यौ हुँ अपनी ओर लगाय॥
तुम दयानिधि होगे स्वामी महरि नजरि की आय।
दयाकृष्ण की लाज तुम्हें है दुःखैं देहु नसाय॥१७॥
जाकौ मन दाऊजी आपु हरचौ।
कोटि उपाय करौ किन कौऊ छिन नहि जात टरचौ॥
जो जन तुमरौ ध्यान धरत है सो छिन मांहि तरचौ।
दयाकृष्ण प्रभु दास तिहारौ चरननि आनि परचौ॥१८॥

रागसोरठ—

भजौ मन रेवती बलिराम।
शिव विरंचि जाकौ ध्यान धरत हैं सुमिरत आठों जाम॥
जो जन धावत सो फल पावत पुजवत सब के काम।
दयाकृष्ण निजदास तुम्हारौ चरण कमल विश्राम॥१९॥
नैना तेरे मान गुमान भरे।
पिय दरसन की आस करत हैं अजहु न दृष्टि परे॥
आपुन जाय द्वारिका छाये उन हरि हम विसरे।
दयाकृष्ण या मूरति ऊपर चरननि आनि परे॥२०॥

रागकांलग—

दाऊ महाराजा ओ दरसि दिखाइजा।
तेरे दरसन का हूँ मै प्यासा सावां की अदा दिखलाइजा॥

छिन प्रति तुमरौ ही गुन गाऊँ परचौ रहूँ दरवाजा ।
दयाकृष्ण कू अपनौ जानिकै वेगि करौ यह काजा ॥२१॥
राग-भजि लै मन रोहिणी नंदन कों नंदन कों जगवन्दन कों ।
विपति विदारण सब सुख कारन सोहत रूप फनिन्दन को ॥
हल मूशल आयुध कर राजै मारत है खल पुंजन को ।
दयाकृष्ण निज सरनि तिहारी दूरि करो भव फंदन को ॥२२

रागकाफी—

संकरषन जू सरनि तुम्हारी ।
दीन बंधु भक्तनि वर दाता भव बाधा किनि हरो हमारी ॥
दीसत नांहि और त्रिभुवन में तुम समानि सुखकारी ।
दयाकृष्ण निज सरनि आपनी राखि लेहु हलधारी ॥२३॥
राग-लीजै खबरि मेरी हलधारी ।
यह संसार स्वारथ को लोभी भाइबंद सब सुत अरु नारी ॥
तुम ही आनि सहाइ करौ प्रभू भव की त्रास अटकी यह भारी
दयाकृष्ण बलभद्र विना अब और नाहि कोइ सुखकारी ॥२४
अब तुम लीजो खबरि हमारी ।
दुष्टन कोप कियौ चहुँ दिस तें विसरि गई सुधि सारो ॥
जैसे गज की हरी आपदा तैसे हरौ हमारो ।
दयाकृष्ण कों अपनौ जानिकें कृपा करौ हलधारी ॥२५॥
रेखता-अहो बलराम सुखधाम दरसदैना वजाहेगा ।
मया करि रावरे जन पै हियें लावन मजाहेगा ॥
तेरे ए चश्म हैं खूनी करे लख जखम मान्या है ।
भया मो दिल दिवाना है तुही जगमांहि जान्या है ॥
मोसौ नहि अति पतित कोई करो करुना हियें जोई ।
हुँ तो तुव दर्स का प्यासा पुजा वो मोर यह आसा ।
कमल वर हस्त सिर धरियै कृपा दयाकृष्ण पर करियै ॥

रेखता—
अहो दिल जान दिल सेती जुदा हमकूँ नहीं करना।
महरि की नजरि भालोगे सदा मुझपर फजुल करना॥
खूबी तेरी खुभी दिल में विरह की तप बुझाओगे।
लग्या तुझ दामनी सेती यही मन में धराओगे॥
अहो बलराम या विनती मेरी हियते लगावोगे।
भने दयाकृष्ण सुखसेती सदा रस रूप प्यावोगे ॥२७॥
सजन सजि धाम में बैठ्या सज्या सिर केसरी फेंटा।
गोरे मुख को करूँ पूजा हुसन का चंद है दूजा॥
ललित कुंडल श्रवन सोहें कमल दल नैन मन मोहैं।
अलक को लटकि वेसरि की खुबी दिल मांहि या हार की॥
उडपकै चिवुक का हीरा फव्वौ ठोड़ी हरै पीरा।
ऐसौं कवि कौन छवि गावै दास दयाकृष्ण बलि जावै ॥२८
रेवती रमन हो प्यारे दरस देकै जिवाओगे।
प्रेमभरी मंजु वे बतिया सुधा सम रूप प्यावागे॥
रमक भरि नेह चमकन चितै चित कूं चुराओगे।
झूमि झुकि दृगन की झमकनि वहै मुसकन दिखाओगे॥
हया मुस्ताकदिल मेरा दरस प्याला पिवा ओगे।
भनैं दयाकृष्ण सुख सेती मुझै चरनों लगाओगे ॥२९॥
मिल्या मोहि नंद का लाला धरे पटपीत वनमाला।
सोहैं दृग मंजु कजरारे प्रेम भरे रूप मतवारे॥
इनों के पल में जोई पड़ेगा सुघड सोई।
हुँ तो भई प्रेममतवारी दास दयाकृष्ण बलिहारी ॥३०॥

छप्पय–जय फणीश जगदीश ईश प्रिय सीस महीधर।
जयगर्वित नृपगर्व राजत हलमूसर कर॥
जय प्रलम्बरिपु समन दमन जग वमन ज्वालमुख।
जय अनंत भगवंत संत दुख हरन करण सुख॥

जय राम रमापति बंधु बड़ हम दीन तुमरी शरण।
प्रभु करहु दयानिज दास पै जय जय जय रेवतीरमण ॥३१

श्रीरेवतीवन्दना—

दोहा—अहो कुंवरि श्रीरेवती अबतू मोतन हेरि।
दयाकृष्ण पै करि कृपा भवसागर तें फेरि ॥१॥

कवित्त— सुन्दर उज्यागर है रूपरस नागर है,
रतिरस सागर है कोकिलासी वानी है।
भक्ति मुक्तिदायक है अरि कुल घालक है,
तीनि लोक नायक के अंक लिपटानी है॥
फूलहू ते सुकुमार सोभित अतुलभार,
दयाकृष्ण त्रिपुरारि वेदन वखानी है।
कामहू तें अभिराम दिव्य देह सुख धाम,
ऐसी बलराम जू की सोहै ठकुरानी है ॥२॥

दोहा—अहो कुंवरि श्रीरेवती तेरे द्दग है जोरि।
छवि निरखन पिय माधुरी मो मन लेत हिलोर ॥३॥
अहो कुंवरि नृप रेवती मेरी होहु सहाय।
भवसागर की ग्राह वहु जोति वेगि छुड़ाय ॥४॥
ठकुरानी बलराम की पुजवौ मन की आस।
जमम जनम मोहि दीजियो निज चरनन कौ वास ॥५॥

कवित्त— श्री तू सीता तू गायत्री गीता तू परम,
पुनीता तू कहैं वेद नेति नेती है।
रती तू रंभा तू जगत मात अम्बा तू,
करत न विलम्बा तू भक्तन वर देती है॥
उमा तू रमा तू शील स्वधा तू क्षमा तू,
त्रिभुवन में जमातू तीनों गुन त्रेती है।
राजा रैवत की बेटी सदा सन्तन सुखदेती श्रो,
सो तेरे यश गाइवे कुँ मेरी मती केती है ॥६॥



दयाकृष्णवाणी—(उपदेशामृत)

दोहा—हरि पद भजुमन विषय तजि नित मग हेरत काल ।
करहि कुसल बलभद्र जब मिटै सकल भ्रमजाल ॥१॥
यह तन नश्वर स्वप्न सम हलधर गुण चितलाव ।
फिरि फिरि मिलै न मनुष वपु चरन कमल लिपि टाव ॥२
जो सुख चाहै जीव कों निश्चै भजि बलराम ।
कृपा दृष्टि अवलोकि कें पुरवौ मन के काम ॥३॥
भजन भजन तू कहतु हो भज्यौ न अरे गमार ।
जौ भजतौ बलराम प्रभु च्यों हौ तौ भवरव्वार ॥४॥
अखिल धर्म जिनि अचरचौ जिनि सेये पद कंज ।
जीवन मुक्त सो है रहे डारचौ भवभय भंज ॥५॥
चरणामृत बलभद्र के पिवत मिटै जमत्रास ।
पाप निसा सम जाइ घटि उदै होत दिन रासि ॥६॥
हलधर श्रीगिरिधरन के जुगल चरन सों हेत ।
दयाकृष्ण संसार में ताहि अभै कर देत ॥७॥
दाऊ मेरौ लाडिलौ सब की करै सहाव ।
मनसा पूरी करतु है जैसौ जाकौ भाव ॥८॥
दाऊजी के नाम कौ प्रगट महातम जोइ ।
अश्वमेद गोमेद नर वाजपेइ फल होइ ॥९॥
मन वाचक अरु कायके जिते पाप जगमांहि ।
ते ते श्रीबलदेव के नाम लेत मिटि जांहि ॥१०॥
बार बार तू दरसि कर बलदाऊ कौ जाय ।
सुफल होंहि सब कामना आनंद उर न समाय ॥११॥



हम तौ श्रीबलदेव उपासी ।
अन धर्म जिय में कछु रुचिना सब सों रहत उदासी ॥
शिव सनकादि ध्यान नहि आवत निसदिन करत खवासी ।
सदा प्रसन्न रहत चरननि में कहा जग्य कियें कासी ॥

भस्म लगाय लिंग गले बांधौ निसिदिन फिरौ उदासी ।
राजपाट धन चहियत नाहें रजके रहें हुलासी ॥
वृन्दावन गोवरधन मथुरा गोकुल करन सुवासी ।
नंदगाम बरसानौ सुखनिधि न्हात मिटत चौरासी ॥
यह वरदान पाय रोहिनि सुत मेंटत जम की फांसी ।
दयाकृष्ण इन्द्रादिक सुख कहा हम निज हैं बृजवासी ॥१२॥
स० क्यों भटकै सब तीरथ में और काहे कूं कानन में घर छावै ।
जोग सुयज्ञ महातपदान सु काहे कूँ वेद पुरान पढावै ॥
साधन व्रतं करै किम सगिरे तिन मांझ अरे मन च्यों भटकावै ।
छूटि जांहि तन के दुख सबरे शरनबलिराम की क्यों नहिं आवै ॥
रागपूरबी—अरे मन काहे कुं सोच करै ।
जीव जंतु भुवमध्य चराचर सबके उदर भरै ॥
गर्भवास में जिनि तोकुं राख्यौ जठरा अगिनि जरै ।
धनी नांहि सुमिरयौ एकउ पल कैसै भव उतरै ॥
जब जम आनि कंठपै बैठै सुधि वुधि सब विसरै ।
दयाकृष्ण बलभद्र ध्यान धरि सो तेरो दुःख हरै ॥१४॥
कवित्त— धर्म जग त्यागे अधरमहीमें अनुरागे,
परम न पुत्र कानि राखत पिताऊकी ।
दयाकृष्ण सुकृत सुहृदता सरम तजि,
लोभनें पलटि दई मति सब काऊकी ॥
संपति विहीन दुखी दीन भये नारीनर,
इन्द्र हू के गेह किमी भई वरषाऊ की ।
वरत्यौ कराल कलि क़ाल कौ दुखद काल,
या समै में सुखद शरन बलदाऊ की ॥२५॥
दोहा—दयाकृष्ण संसार की बड़ी अटपटी रीति ।
सांचे की माने नहीं झूठे की परतीति ॥१६॥
दयाकृष्ण संसार ते देखि भयौ भयभीत ।
परमारथ जानै नहीं स्वारथ सों ही प्रीति ॥१७॥

धर्म शील लावन्यता छिमा दया उर होय ।
काम लोभ के निकट नहिं पात्र कहावै सोय ॥१८॥
तृण ते हलकी तूल है तूल हुते घटि भीख ।
मति मांगौ गौरवनसै दयाकृष्ण यह सीख ॥१९॥
बार बार अरजीन करि मतत पुरुष ढिग जाय ।
लघुता पामें सुघर नर ताल मोल घटि जाय ॥२०॥
हाथ थके अरु पांवहू थको बुद्धि बस नाय ।
बिरधापन में रामपद साधन दूसर नाय ॥२१॥
विद्या प्रभुन दीजु पुनि लाभ मित्र अरु मान ।
वैद्य ज्ञाति ये ना मिलें तहाँ न करौ प्रस्थान ॥२२॥

उपसंहार—

बार बार बिनती करों चरण नवाऊँ सीस ।
लज्जा मेरी राखियों तुम हौ ब्रज के ईस ॥१॥
हरि गुण गुढ सुमूढ मैं कहँ लग करूँ उचार ।
संभु सुरेस गणेस पे पावत नेंक न पार ॥२॥
जो सीखैं गावै सुनैं पुरवै मन की आस ।
दयाकृष्ण वर्णन कियौ श्रीबलदेव विलास ॥३॥
सहज मुक्ति पद पावहीं श्रवन सुनैं जो कोइ ।
अनायास बलदेव की तापर कृपा सु होइ ॥४॥
जौ कहुँ वरन अलीन हो मो जिन दोष निहारि ।
बाल बुद्धि सम जानिकै लीजों सुकवि सुधारि ॥५॥
संमत अष्टादस जु सत अठसटि ऊपर और ।
फागुन सुदी सु द्वैज सुभ शुक्रवार सिरमौर ॥६॥
ताही दिन या ग्रन्थ कौ जन्म भयौ ब्रजमांहि ।
दयाकृष्ण बलदेव में दाऊ जू के पांहि ॥७॥

इति श्रीसुकवि पंड्या दयाकृष्ण विरचित श्रीबलदेवविलास ग्रन्थ सम्पूर्णः ॥

শ্রীশ্রীকৃষ্ণদাসাষ্টকম্

শ্রীরামশিষ্যং কটকে সুজন্মং
পৌগণ্ডকালে গুরুপাদযাতম্ ।
গৌরোদয়োর্ব্ব্যাং পরিযান্তমাশু
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।১

গৌরাঙ্গদাসাদিভিরুন্মদেন
বৃন্দাবনে বাসকৃতং সহর্ষম্ ।
ভাবানুরাগেণ বদন্তমুচ্চৈঃ
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।২

গৌড়ীয়ভক্তৈ রচিতা রসাঢ্যা
উদ্দীপিতা গ্রন্থবরা হি যেন ।
সাহিত্যরত্নং ব্রজভূষণং তং
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।৩

বিজ্ঞৈঃ সমেতং সুমনঃসরঃস্থং
গ্রন্থানুলেখং পরিশোধয়ন্তম্ ।
সদ্ভক্তিসিদ্ধান্তনিধিং সুনিষ্ঠং
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।৪

সৌম্যং কৃপালুং মধুভাষকণ্ঠং
শুক্লাম্বরং ক্ষীণতনুং নিতান্তম্ ।
নিঃসঙ্গমানন্দবপুং মহান্তং
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।৫

লীলাস্মরন্তং সততং জপন্তং
দেবাগ্র উন্মত্তপরং নটন্তম্ ।
সঙ্কীর্ত্তনামোদমদং প্রসিদ্ধং
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।৬

ভক্তাধরোচ্ছিষ্টললাতিচিত্তং
স্নেহাভিমূর্ত্তিং চলনাতিধীরম্ ।
ভক্তানভক্তান্ চ নমন্তমুৎকং
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।৭

রোমাঞ্চকম্পাশ্রুতরঙ্গযুক্তং
মুগ্ধং প্রশান্তং নিতরাং হসন্তম্ ।
বৈরাগ্যসিন্ধুং করুণৈকবন্ধুং
শ্রীকৃষ্ণদাসং প্রণমামি নিত্যম্ ।।৮

শ্রীকৃষ্ণদাসপাদস্যাষ্টকং পঠন্তু বৈষ্ণবাঃ ।
যেন পঠনমাত্রেণ চিত্তশুদ্ধির্ভবেৎ সদা ।।৯

ইতি শ্রীবৃন্দাবননিবাসিনা শ্রীবন্দাবনদাসেন
বিরচিতং শ্রীশ্রীকৃষ্ণদাসাষ্টকং
সমাপ্তম্ ।।

